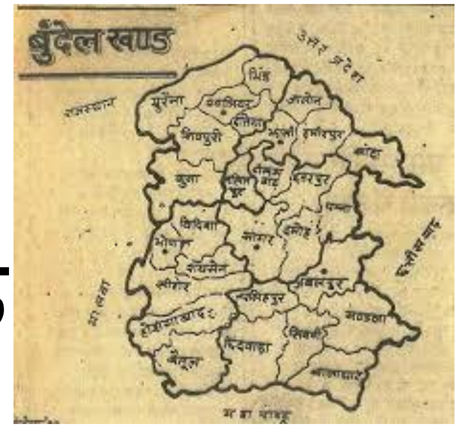
# अरविन्द कुमार त्रिपाठी द्वारा पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन







भौगोलिक
**Bhaugolik**

Puratan BANDA, Bundelkhand  ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

भौगोलिक / **Bhaugolik**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड  का संक्षिप्त वर्णन

भौगोलिक / **Bhaugolik**

| | |
|---|---|
| अध्याय शीर्षक | भौगोलिक |
| सर्वाधिकार | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| आइ एस बी एन/ **ISBN** | **978-93-5906-820-6** |
| प्रकाशक | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक<br>ग्राम – अछरौन्ड,<br>बान्दा – 210 001<br>उत्तर प्रदेश |
| मूल्य | निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना |
| सन्स्करण | प्रथम, 01 अप्रैल 2020 |
| आवरण/मुखपृष्ठ | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| शब्द – संयोजन | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| मुद्रक | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| सन्दर्भ/साभार/सौजन्य | अध्याय **Reference** देखे |

| | |
|---|---|
| **Chapter Heading** | **Bhaugolik** |
| **Copyright @** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **ISBN** | **978-93-5906-820-6** |
| **Publisher** | **Arvind Kumar Tripathi**<br>**Village - Achharaund**<br>**Banda - 210 001**<br>**Uttar Pradesh** |
| **Price** | **Free, Circulate to Friends** |
| **Edition** | **First, 01 April 2020** |
| **Cover Main** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Word Compositor** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Printer** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Reference/ Gratitude/ courtesy** | **Peruse Chapter - REFERENCE** |

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड  का संक्षिप्त वर्णन

भौगोलिक / **Bhaugolik**

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड  का संक्षिप्त वर्णन

भौगोलिक / **Bhaugolik**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – भौगोलिक का संक्षिप्त वर्णन

भौगोलिक / **Bhaugolik**

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड  का संक्षिप्त वर्णन

भौगोलिक सीमाएं –

वर्तमान व पुरातन

चेदि, जेज्जाकभुक्ति के नाम से विख्यात ''बुन्देलखण्ड का उत्तरी अक्षान्स $23^0$–$24^0$ अन्श, $26^0$–$50^0$ अन्श और पूर्वी देशान्तर $77^0$–$55^0$ व $80^0$ अन्श के मध्य स्थित है।'' यमुना नदी इसकी उत्तरी तथा चम्बल उत्तरी–पश्चिमी सीमा निर्धारित करती है। दक्षिणी दिशा में मध्य प्रदेश की जबलपुर तथा सागर मण्डल तथा दक्षिण पूर्व में बघेलखण्ड तथा मिर्जापुर की पहाड़ियाँ शामिल होती हैं। उत्तर प्रदेश के जिला झान्सी, जालौन, बान्दा, हमीरपुर, ललितपुर, चित्रकूट तथा महोबा यमुना तथा बेतवा नदी से सिन्चित है। बुन्देलखण्ड में कई छोटी–बड़ी रियासतें शामिल थीं जो अब मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश के बन्टवारे में चली गई है।

15

बुन्देलखण्ड का सीमान्कन समयानुसार परिवर्तित रहा है। कैप्टन जैम्स–फ्रैंकलिन (स01825) के अनुसार बुन्देलखण्ड के उत्तर में यमुना नदी प्रवाहित है, दक्षिण में बरार और मालवा प्रदेश है। पूर्व में बघेलखण्ड है तथा पश्चिम में सिन्धिया अधिकृत राज्य है। इसमें टेहरी, झान्सी, दतिया, समथर, देशी राज्य समाविष्ट हैं।

बुन्देलखण्ड प्रदेश स0 1877 ई टी ऐटिकिन्सन के अनुसार– उत्तर में यमुना नदी तक, उत्तर पश्चिम में चम्बल नदी तक, दक्षिण में जबलपुर (सागर नर्मदा क्षेत्र) तक तथा उत्तरपूर्व में बघेलखण्ड और मिर्जापुर तक विस्तृत है। इसमें बान्दा, झान्सी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर के ब्रिटिश शासित जिले, सन्धि राज्य ओरछा, दतिया, समथर सनद प्राप्त राज्य अजयगढ़, अलीपुर, अष्टमैया, धुखई, टोरी–फतेपुर, बिजना–पहाड़ी, बन्का, बरौंधा, बावनी, बेहट बिजावरी तथा चौंबियाना जागीर– भेसौधा नया गांव, पालदेव, पहाड़ी, तराव तथा जिगिनी, खनियाधान, लुगासी, नयागांव, रेवई, पन्ना, सरीला सम्मिलित थे। सागर दमोह जिले ''नर्मदा क्षेत्र'' अन्ग्रेजों के शासनाधीन थे।

क्षेत्रफल

1900 ईस्वी में बान्दा तहसील 25 डिग्री 17 मिनट से लेकर 25 डिग्री 38 मिनट उत्तर के बीच और 82 डिग्री से लेकर 80 डिग्री 35 मिनट तक के बीच का क्षेत्रफल था। यह कुल क्षेत्रफल 2,73,272 एकड़ था जिसे 426.99 वर्ग मील भी कह सकते हैं। कर्वी तहसील, क्षेत्रफल के लिहाज से, सबसे बड़ी तहसील थी। ऊपर दिए गए अक्षांशों(कोऑर्डिनेट) के हिसाब से पता चलता है कि यह क्षेत्र लगभग चौकोर है। जिसे केन नदी दो असमान हिस्सों में बांट देती है। इस इलाके में, केन नदी उत्तर से दक्षिण की तरफ बहती है। इसके उत्तर में पैलानी और मटौंन्ध तहसील है। मौदहा हमीरपुर में आता है। मौदहा और बान्दा के बीच ऐसा कोई प्राकृतिक निशान नहीं है जिससे सीमान्त को दर्शाया जा सके। मौदहा तहसील के पश्चिम में महोबा जिला और चरखारी राज्य हैं। महोबा के दक्षिण चरखारी गौरीहार राज्य हैं। गौरीहार चार अलग–अलग गांवो के चारों तरफ है। तहसील के पूर्व और उत्तर पूर्व में गिरवां और बबेरू है। बबेरू गरारा नाले से विभाजित है। केन के पश्चिम की तरफ तहसील का अधिकान्श  हिस्सा है। नदी के दोनों तरफ की जमीन (फ्रिन्ज– बालों या लटकी हुई रस्सी की तरह) (रीवराइन– नाले खड्डे खादर व तंग गहरी घाटी) समतल जगह से माथे पर बिखरे बालों की तरह की कटान और आगे बढ़ने पर नाले खड्डे और गहरी घाटियां बनाते हुए नदी की धारा में मिल जाते हैं। इनकी मिट्टी हल्की है। पूर्व की तरफ बढ़ने पर घटिया मार से कड़ी काबर होने लगती है।(ट्रैक्ट– प्रणाली पटवा) और इसी प्रकरण में परगने की सीमा की तरफ बढ़ता जाता है। पश्चिमी हिस्सा शियाम जो केन की उपनदी है, के द्वारा विभाजित कर देती है शियाम उत्तर की तरफ बहती है और अन्य उपनदी जो चन्द्रावल के नाम से जानी जाती है, उत्तर–पश्चिम की तरफ बहती है।

शियाम और केन नदी के बीच उबड़ खाबड़ निम्न स्तर की काली मिट्टी की प्रणाली निबन्ध रूप से बढ़ती है। शियाम के पश्चिम की तरफ मिट्टी की किस्म और स्तर अच्छा होने लगता है। इसके और चन्द्रावल के बीच बहुत अच्छी किस्म की मार का समतल है। लेकिन यह भी परगना के पूर्व की मिट्टी की बराबरी का नहीं है और जमीन पर कांस और ढाक/पलाश के बहुत घने जंगल हैं।

शियाम के दोनों पूर्व पश्चिम में सिरसी है और बिचुई नाला शियाम में जाकर मिलता है। खड्डी गांव का पानी केल और उसकी सहायक नाला लाहोरी नाले में आता है और अन्ततः केन के पूर्व की तरफ बहता है।

(सन्दर्भ 1909 गजेटियर)

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सीमान्कन

भूगोल–वेत्ताओं तथा भाषाविदों ने बुन्देलखण्ड का सीमान्कन निम्नवत् किया है। श्री एस.एम. अली ने विभिन्न पुराणों के आधार पर विन्ध्य क्षेत्र में तीन जनपद विदिशा, दशार्णं एवं करूष की स्थिति का विवरण दिया है। विदिशा में ऊपरी बेतवा का बेसिन, ''दशार्ण'' धसान नदी और उसकी गहरी घाटियों द्वारा चीरा हुआ सागर के पठार तक फैला हुआ प्रदेश तथा करुष के अन्तर्गत सोन नदी के बीच समतलीय मैदान समाविष्ट किया है। त्रिपुरी जनपद में जबलपुर, मण्डला, नरसिन्हपुर जिले माने है। इतिहासकार जयचन्द्र विद्यालंकार ने बुन्देलखण्ड को विन्ध्यांचल पर्वत श्रेणियों में फैला हुआ प्रदेश माना है जिसमें बेतवा(वेत्रवती) धसान, (दशार्ण) और केन (शुक्तिमती) नदी क्षेत्र एवं नर्मदा की ऊपरी घाटी पचगढ़ी से अमरकंटक तक का क्षेत्र शामिल किया है।

पाजिटार के अनुसार ''चेदि देश'' उत्तर में यमुना तट से दक्षिण में मालवा के पठार, दक्षिण–पूर्व में कर्वी(पयस्वनी) नदी से उत्तर–दक्षिण में चम्बल नदी तक फैले हुए प्रदेश का नाम था। डा० रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल ने बुन्देली क्षेत्र का विस्तार उत्तर में मुरैना जिला, पश्चिम में शिवपुरी, गुना तक, दक्षिण में बैतूल जिला तक माना है। डा० महेश प्रसाद जायसवाल ने मध्य के दुर्ग जिले का कुछ भाग, बान्दा का कुछ भाग, महाराष्ट्र के चान्दा, बुलढ़ाना, भन्डारा, अकोला के कुछ भाग को बुन्देलखण्ड माना है।

आधुनिक शोधों के अनुसार बुन्देलखण्ड को भौतिक क्षेत्र घोषित किया गया है और इसकी सीमाएं इस प्रकार है–''वह क्षेत्र जो उत्तर में यमुना, दक्षिण में विन्ध्य प्लेटो की श्रेणियों, उत्तर–पश्चिम में चम्बल और दक्षिण–पूर्व में पन्ना–अजयगढ़ श्रोणियों से घिरा हुआ है, बुन्देलखण्ड के नाम से जाना जाता है। इसमें उत्तर–प्रदेश के चार जिले–जालौन, झान्सी, हमीरपुर और बान्दा तथा मध्यप्रदेश के चार जिले–दतिया, टीकमगढ़, छतरपुर और पन्ना के अलावा उत्तर–पश्चिम में भिन्ड जिले की लहार और ग्वालियर जिले की भान्डेर तहसीलें भी सम्मिलित है।'' इतिहास, सन्स्कृति और भाषा की दृष्टि से बुन्देलखण्ड बहुत विस्तृत प्रदेश है लेकिन ये सीमारेखाएं भू–सन्रचना की दृष्टि से उचित कही जा सकती है।

जनपद भूखंड की एक ऐसी इकाई है जिसमें वहाँ के निवासियों की सन्स्कृति–सभ्यता एवं सन्स्कारो की समानता देखने को मिलती है। इसी यथार्थ पर आधारित डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने ''प्राचीन काल के जनपद को एक ऐसी सांस्कृतिक भौगोलिक ईकाई की सन्ख्या से अभिहित किया है।'' कहा जाता है कि नर्मदा और चम्बल घाटी की सभ्यता बहुत प्राचीन है लेकिन जनपदीय चेतना का प्रादुर्भाव रामायण और महाभारत काल से हो चुका था। महाभारत और जनपद–काल का चेदि इसी प्रकार का जनपद था, जिसका समीकरण पार्जिटर ने वर्तमान बुन्देलखण्ड से किया है। उनके अनुसार चेदि देश उत्तर में यमुना के दक्षिणी तट से दक्षिण में मालवा के पठार और बुन्देलखण्ड की पहाड़ियों तक तथा दक्षिण–पूर्व में चित्रकूट के उत्तर–पूर्व में बहने वाली कर्वी नदी से उत्तर–पश्चिम में चम्बल नदी तक प्रसारित विस्तृत प्रदेश का नाम था। डा0 वी० वी० मिराशी के अनुसार मध्यकाल में उसका विस्तार नर्मदा तक हो गया था। ज्यादातर इतिहासकारों ने इस सीमान्कन को सही माना है। इस सीमान्कन का आधार पूर्णतया सांस्कृतिक माना है। लेकिन उस समय सीमा का आधार युद्ध भी होते थे इस कारण वर्णित सीमान्कन को विश्वसनीय नहीं माना गया।

जनपदों के पतन के बाद सांस्कृतिक आधार का स्थान राजनैतिक ने ले लिया। चन्देलकाल में ''जेजाक भुक्ति'' की सीमायें वर्तमान बुन्देलखण्ड से विस्तृत थीं। चन्देल राजाओं के राज्य में उनके आधीन विभिन्न लोक–सन्स्कृति के क्षेत्र थे, जिनकी लोक–भाषा बघेली, ब्रज, कन्नौज जैसी क्षेत्रीय भाषायें थी न कि बुन्देली। इन कारणों से इन सीमाओं को बुन्देलखण्ड की सीमा नहीं माना जा सका। दीवान प्रतिपाल सिन्ह लिखित ''बुन्देलखण्ड का इतिहास'' नामक पुस्तक के प्रथम भाग के अनुसार "पूर्व मे टोन्स और सोन नदियाँ अथवा बधेल–खण्ड या रीवा राज्य है तथा बनारस के निकट बुन्देला नाले तक सिलसिला चला गया है पश्चिम में बेतवा, सिन्ध और चम्बल नदियां विन्ध्याचल श्रेणी तथा मालवा, सिन्धिया का ग्वालियर राज्य और भोपाल राज्य है, तथा पूर्वी मालवा इसी राज्य में आता है। उत्तर में यमुना एवं गंगा नदियाँ अथवा इटावा, कानपुर, फतेहपुर, इलाहाबाद, मिर्जापुर तथा बनारस जिले है, दक्षिण में नर्मदा और मालवा है।'' दीवान प्रतिपाल सिन्ह ने निम्न पंक्तियों में बुन्देलखण्ड की सीमायें प्रदर्शित की हैं –

उत्तर समथल भूमि गंगा जमुना सुबहति है।
प्राची दिसि कैमूर, सोन कासी सुलहति है।
दक्षिण रेखा विन्ध्याचल वल शीतल करनी।
पश्चिम में चम्बल चम्बल सोहित वन हरनी।
तिनि मधि राजेगिरि, बन सरिता सहित मनोहर।
कीर्ति स्थल बुन्देलन को, बुन्देलखण्ड बर 13

इस सीमान्कन में ऐतिहासिक व राजनीतिक टृष्टिकोण प्रमुख रहा है।

बुन्देलखण्ड के सुप्रसिद्ध यशस्वी कवि व लेखक श्री वियोगी हरि ने बुन्देलखण्ड की सीमा इस प्रकार निर्धारित की –
''इत चम्बल उत नर्मदा इत यमुना उत टोन्स।

## भौगोलिक / Bhaugolik

छत्रसाल से लरन की रही न काहू होस।। 14

यह दोहा छत्रसाल की राज्य सीमा से सन्बन्धित है लेकिन इतिहास में विख्यात है। श्री गोरेलाल तिवारी ने बुन्देलख्ण्ड की सीमा इस प्रकार निर्धारित की है– ''भारत के मध्य भाग में नर्मदा के उत्तर की ओर यमुना के दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत की शाखाओं से समाकीर्ण और यमुना की सहायक नदियों के जल से सिन्चित सृष्टि सौन्दर्याकृत जो प्रदेश है उसे बुन्देलखण्ड कहते है।''

यदि हम सांस्कृतिक सीमान्कन का आधार भाषा या क्षेत्रीय बोली को माने तो बुन्देलखण्ड के सन्दर्भ में, जनपद परिवर्तन के साथ बोली में प्रयुक्त शब्दों में भिन्नता देखने को मिलती है। इसलिए भाषा शैली में कछ न कुछ परिवर्तन स्वाभाविक है। सर्वप्रथम विलियम कैरे ने, जो– 1793 ई0 में भारत आए थे, ने अपने भाषा सर्वेक्षण के प्रतिवेदन में 33 भारतीय भाषाओं की सूची में बुन्देलखण्डी पर भी विचार किया और उसका नमूना दिया। स0 1838 से 1843 ई0 के बीच राबर्ट लीच ने बुन्देलखण्ड की हिन्दी बोली के व्याकरण का निर्माण किया। इसके बाद सर जार्ज ए० ग्रियर्सन ने बुन्देलखण्डी पर महत्वपूर्ण कार्य कर प्रत्येक क्षेत्र की बुन्देली भाषा विचार प्रस्तुत करते हुए, बुन्देली की सीमाएँ खोजी। जार्ज ए. ग्रियर्सन के अनुसार–'' बुन्देली भाषा का क्षेत्र बुन्देलखण्ड के राजनीतिक क्षेत्र से मिलता जुलता नहीं है। वह उत्तर में चम्बल नदी के उस पार आगरा, मैनपुरी, इटावा, जिलों के दक्षिणी भागों तक, पश्चिम में चम्बल नदी तक न होकर पूर्वी ग्वालियर तक, दक्षिण में सागर और दमोह तक ही नहीं, वरन् भोपाल के पूर्वी भागों, नर्मदा के दक्षिण में नरसिन्हपुर, होशंगाबाद सिवनी जिलों तथा बालाधार और छिन्दवाड़ा के कुछ क्षेत्रों तक फैला हुआ है। पूर्व में पूरे बान्दा जिले की भाषा बुन्देली नहीं है। श्री कृष्णनन्द गुप्त ने सीमान्कन को और भी विस्तृत कर दिया। डॉ० उदयनारण तिवारी, डा० हरदेव बाहरी आदि ने ग्रियर्सन की सीमाओं को ही मान्यता प्रदान की। ग्रियर्सन के भाषा सर्वेक्षण के बाद इस कार्य को योजनाबद्ध तरीके से आगे नहीं बढ़ाया गया।

भूगोल बेत्ताओं ने अपना दृष्टिकोण भौगोलिक दृष्टि से किया। उनके अनुसार बुन्देलखण्ड की भौगोलिक, सांस्कृतिक और भाषा सम्बन्धी समानता की बात आती है। ''बुन्देलखण्ड भारत का एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र है, जिसमें न केवल सन्रचनात्मक एकता, भौम्याकार की समानता और जलवायु की समता है, वरन् उसके इतिहास, अर्थव्यवस्था और समाजिकता का आधार भी एक ही है। वास्तव में समस्त बुन्देलखण्ड में सच्ची सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक एकता है।''

यहां पर भौगोलिक टृष्टि से अध्ययन करने के बजाय अगर हम भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं भाषिक दृष्टियों को एक साथ लेकर अध्ययन व सीमान्कन करे तो ज्यादा समाचीन रहेगा। भूगोल वेत्ता पीटर वाश के ''मैगाजियोग्राफी'' पद्धति के आधार पर किये गये अध्ययन के अनुसार बुन्देलखण्ड क्षेत्र के भूमि उपयोग पर इस प्रदेश के निवासियों की आंकाक्षाओं, आस्थाओं, मान्यताओ, टृष्टिकोणों पूर्वाग्रहों एवं नियमों की अवेहलना कर भूमि उपयोग नियोजन कार्य सम्पादन में आशातीत सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती है। इस कारण नियोजकों को सांस्कृतिक भूगोल के तत्वों को भी ध्यान में रखना चाहिए। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सांस्कृतिक तत्व सदा से अपना विशेष महत्व रखते है। इस कारण सांस्कृतिक भूगोल के आधार पर विश्लेषण करना अधिक उपयुक्त होगा। हमें यह मानना चाहिए, कि सांस्कृतिक तत्वों में गतिशीलता एवं परिवर्तन त्वरित गति से नही आ सकता है। हम सांस्कृतिक भूगोल को भूगोल की विकासशील शाखा मान सकते। यहां के भूगोल के कारण निवासियों की अपनी सन्कल्पना एवं अवधारणायें है।

बुन्देलखण्ड का क्षेत्र ऊंचा–नीचा पथरीला है। यहां की मिट्टी कठोर एवं सामान्य परिस्थितियों में अनुर्वरक है। इस क्षेत्र में पहाड़ एवं घाटियाँ भी प्रचुर मात्रा में है। निम्न कठिनाईयों के कारण यहां का जन–जीवन सन्घर्षशील एवं जटिल है। भौगोलिक सन्रचना के आधार पर बुन्देलखण्ड दो भागों मे विभक्त है। मैदानी भाग में बान्दा, हमीरपुर, जालौन, झान्सी, ललितपुर आदि तथा उच्च भूमि क्षेत्र में पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, महोबा आदि क्षेत्र आते है।

बुन्देलखण्ड के उत्तर में यमुना नदी है और सीमारेखा को भूगोलविदों, इतिहासकारों, भाषाविदों आदि सभी ने स्वीकार किया है। पश्चिमी सीमा– चम्बल नदी को भी अधिकान्श विद्वानों ने माना है। परंतु उत्तरी चम्बल इस प्रदेश से दूर है और निचली चम्बल निकट है। मध्य और निचला चम्बल के दक्षिण में स्थित मध्य– प्रदेश के मुरैना और भिण्ड में बुन्देली सन्स्कृति और भाषा का मानक रूप समाप्त हो जाता है। भाषा और सन्स्कृति की दृष्टि से ग्वालियर और शिवपुरी का पूर्वी भाग बुन्देलखण्ड में आता है और साथ ही उत्तर प्रदेश के जालौन जिले से लगा हुआ भिण्ड का पूर्वी हिस्सा भी, जिसे भूगोलविदो ने बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सम्मिलित किया है। सन्स्कृति के विस्तार को घने जंगल तथा बीहड़ बाधित करते है। चम्बल और कुवारी नदी के बीहड़ो तथा दुर्गम भागों के कारण एवं मुरैना और शिवपुरी के घने जंगलों के होने से बुन्देली भाषा और सन्स्कृति का प्रसार इटावा, मैनपुरी और आगरा जिलों तक नहीं पहुँच पाया।

बुन्देलखण्ड की पश्चिमी सीमा पर ऊपरी बेतवा और ऊपरी सिन्ध नदियाँ तथा सीहोर से उत्तर में गुना और शिवपुरी तक फैला मध्य भारत का पठार है। पठार के ही समान्तर विन्ध्य श्रेणियां भोपाल से लेकर गुना और शिवपुरी तक फैली हुयी है, जो अवरोधक का कार्य करती है। बुन्देलखण्ड के पश्चिम में रायसेन जिले के रायसेन और तहसीलों का पूर्वी भाग, विदिशा, बासौदा और सिरोंज के पूर्वी भाग की सीमा बेतवा बनाती है। गुना जिले की अशोक नगर, मुंगावली तथा शिवपुरी की पिछोर और करैरा तहसीलें है जिनकी सीमा सिन्ध नदी

बनाती है। विदिशा इतिहास प्रसिद्ध तथा दशार्णी सन्स्कृति का प्रमुख केन्द्र रहा है। नाग सन्स्कृति भी बुन्देलखण्ड के बड़े भू–भाग में प्रसारित रही है।

भूगोलवेत्ता सर थामस होल्डिच के अनुसार– ''सभी प्राकृतिक तत्वों में एक निश्चित जल विभाजक रेखा है, जो एक विशिष्ट पर्वत श्रेणी द्वारा निर्धारित होती है, अधिक स्थाई और सही होती है।'' तथा इस प्रदेश की दक्षिणी सीमा महादेव पर्वत श्रेणी (गोडवाना हिल्स) और दक्षिण–पूर्व में मैकल पर्वत श्रेणी उचित ठहरती है। इस आधार पर होशंगाबाद जिले की होशंगाबाद और सोहागपुर तहसीलें तथा नरसिन्हपुरा का पूरा जिला बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत आता है। कुछ भाषा वैज्ञानिकों ने इन क्षेत्रों के दक्षिण में बैतूल, छिन्दवाड़ा, सिवनी, बालाघाट और मंडला जिलों अथवा उनके कुछ भागों को भी सम्मिलित कर लिया। लेकिन उनकी भाषा शुद्ध बुन्देली नहीं है और वहाँ की सन्स्कृति भी बुन्देलखण्ड से मेल नहीं खाती। लेकिन इतना हम कह सकते हैं कि बुन्देली सन्स्कृति एवं भाषा का यत्किचिंत प्रभाव वहाँ पर अवश्य पड़ा। ऊँचाई पर स्थित होने के कारण वे पृथक हो गये। मैकल पर्वत श्रेणियाँ उन्हें अनेक स्थलों पर अलग करती हुई अवरोधक सिद्ध हुई।

दक्षिण सीमा में नर्मदा नदी तथा विन्ध्य श्रेणियों के पार बुन्देली सन्स्कृति और भाषा का प्रसार कैसे हुआ? इस प्रश्न का उत्तर डा0 काशी प्रसाद जायसवाल द्वारा लिखित ''अन्धार युमीन भारत'' से ऐतिहासिक रुप में प्राप्त होता है –

''भार शिवों (नागों) और वाकाटकों के इस क्षेत्र मे बसने के कारण इस भाग का सम्बन्ध बुन्देलखण्ड से इतना घनिष्ठ हो गया था कि दोनों मिलकर एक हो गये थे और उस समय से इन दोनों प्रदेशों में जो एकता स्थापित हुई थी वह आज तक चली आ रही है। साठ वर्षों तक नागो के यहां रहने से इतिहास का यह परिणाम निकला है कि यहां के निवासी भाषा और सन्स्कृति के विचार से पूरे उत्तरी हो गये है।''

12

गुप्तकाल में बुन्देलखण्ड के इस भू–भाग में बाकाटक यहां रहा करते थे। कुछ विद्वान झान्सी जिले के बगाट या बाघाट को वाकाटकों का आदि स्थान सिद्ध करते हैं। कुछ इतिहासकार पुराणों में कथित किलकिला प्रदेश की समानता पन्ना से करते हैं। पन्ना को वकाटकों की आदि भूमि मानते है। वकाटकों के पश्चात् जेजाभुक्ति के चन्देलों और त्रिपुरी के कलचुरियों के राज्यकाल में भी यह क्षेत्र बुन्देलखण्ड से जुड़ा रहा।

अतः निम्न उदाहरणों से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड की दक्षिणी सीमा महादेव पर्वतश्रेणी की गोंडवाना हिल्स है, जो जबलपुर के पूर्व में मैकल पर्वतश्रेणी से मिल जाती है। इस प्रदेश के पूर्व में मैकल पर्वत श्रेणियां, भानरेर श्रेणियाँ, कैमूर श्रेणियाँ और निचली केन नदी है। दक्षिण पूर्व में मैकल पर्वत हैं, इस कारण नरसिन्हपुर जिले के पूर्व में स्थित जबलपुर जिले के दक्षिणी–पश्चिमी भाग के समतल भाग अर्थात् पाटन और जबलपुर तहसीलों का दक्षिण पश्चिमी भाग बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत आ गया है। निश्चिततः इसी कारण वहाँ की भाषा और सन्स्कृति बुन्देली के अधिक निकट है। किन्तु दमोह पठार के दक्षिण पूर्व में स्थित भारनेर रेन पाटन और जबलपुर तहसीलों के उत्तरी–पूर्वी भागों को बुन्देलखण्ड से अलग कर देती है। भारनेर श्रेणियों के उत्तर–पूर्व में कैमूर श्रेणियाँ स्थित हैं। जिनके पश्चिम में स्थित पन्ना बुन्देलखण्ड में है और पूर्व में बघेलखण्ड है।

इण्डिया ए रीजनल ज्यॉग्राफी, सर आर. एल सिन्ह, पृ 644 के अनुसार– ''पन्ना जिले की तहसील पवई और पन्ना के पूर्व सन्करी पटे में बुन्देली भाषा और सन्स्कृति का प्रसार है। टोन्स और सोन नदियों के उद्गम का भू–भाग दक्षिण–पश्चिम की उस सन्स्कृति से अधिक प्रभावित है। पन्ना जिले के उत्तर में पन्ना अजयगढ़ की पहाड़ियां चित्रकूट तक फैली है। बान्दा जिले का वह भाग जो छतरपुर जिले के उत्तर–पूर्वी कोने और पन्ना जिले के उत्तरी सीमा से लगा हुआ है। उत्तर में गोरिहार (जिला छतरपुर) से लेकर चित्रकूट तक पहाड़ी क्षेत्र की एक सीमा–रेखा बनाता है जिसके उत्तर में बान्दा का मैदानी भाग आरम्भ होता है इसलिए बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। बान्दा जिले का शेष मैदानी भाग उससे बाहरी क्षेत्र में माना जाता है। इस प्रकार बुन्देलखण्ड की उत्तर–पूर्व सीमा निचली केन बनाती है।

11

आर्कियोलॉजी सर्वे रिपार्ट, वाल्यूम 21 ए0 कनिन्घम में पृ सं0 82 के आधार पर– बान्दा के उत्तर पूर्व में चिल्ला नामक ग्राम से <u>आल्हा ऊदल का निवास</u> खोजा गया है। चन्देलों के समय में बान्दा के अधिकान्श भाग पर बुन्देली प्रभाव रहा। बान्दा जिले के उत्तर पश्चिमी भाग में बुन्देली भाषा व सन्स्कृति का प्रभाव पाया जाता है। प्राचीन काल में बान्दा चेदि में सम्मिलित नहीं था, भारशिवों और नवनागों के साम्राज्य से बाहर था और वाकाटको की सन्स्कृति यहां तक पहुँच नहीं पाई, लेकिन कालिन्जर से चित्रकूट तक का भाग बहुत प्राचीन समय से ही इस सन्स्कृति का अन्ग रहा है। बुन्देलखण्ड के उत्तर–पूर्व में निचली केन की तटीय पट्टी का क्षेत्र, बान्दा जिले के नरैनी और करबी तहसीलों का क्रमशः दक्षिणी और दक्षिण–पश्चिमी भाग सम्मिलित हैं। पूर्व में पन्ना और दमोह जिले तथा दक्षिण–पूर्व में जबलपुर जिले के पास और जबलपुर तहसीलों का क्रमबद्ध दक्षिणी व दक्षिण पश्चिमी भाग है। वह भाग मैकल श्रेणियों तक चला गया है जो कि बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत आता है। सोन व टोन्स नदियों की उद्गम घाटी, जो नर्मदा की तरफ दक्षिण की ओर खुलती है और जिसमें पाटन, जबलपुर, मुड़वारा और सीहोर तहसीलें भी सम्मिलित हैं, में सभी बुन्देलखण्ड का क्षेत्र है।

10

उपरोक्त विवेचन के आधार पर भौगोलिक, भाषिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक मानकों पर बुन्देलखण्ड के जनपदो को सरलता से विभाजित किया जा सकता है।

अ उत्तरप्रदेश– के झान्सी, ललितपुर, महोबा, बान्दा, हमीरपुर, चित्रकूट, जालीन जनपद आते हैं।

ब मध्यप्रदेश– के छतरपुर, दतिया, पन्ना, टीकमगढ़, सागर, दमोह, शिवपुरी, ग्वालियर, भिण्ड, सतना, गुना, विदिशा, मुरैना, छिन्दवाड़ा, नरसिन्हपुर, जबलपुर, रायसेन, होशन्गाबाद, बैतूल, सिओनी, मन्डला, बालाघाट जनपद हैं।

यह प्राकृतिक सुस्पष्ट सीमा सभी दृष्टियों से एक जनपदीय ईकाई का निश्चित रेखान्कन करती है, इस सीमान्कन के आधार पर उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश के 29 जनपदों में प्रसारित भू–भाग बुन्देलखण्ड है।

उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुये सीमान्कन सांस्कृतिक क्षेत्रों को आधार ईकाई मानकर करना अधिक उचित है। बुन्देलखण्ड के उत्तर में यमुना नदी है तथा पश्चिमी सीमा पर चम्बल नदी, इस सीमान्कन को लगभग सभी विद्वानों ने माना है। परन्तु ऊपरी चम्बल इस प्रदेश से दूर है और निचली चम्बल निकट है। मध्य और निचली चम्बल के दक्षिण में स्थित मध्य प्रदेश के मुरैना, भिण्ड जिलों में बुन्देली सन्स्कृति व भाषा का रूप लगभग समाप्त हो जाता है। भाषा व सन्स्कृति की दृष्टि से ग्वालियर और शिवपुरी का पूर्वी भाग बुन्देलखण्ड में आता है। इसमें जालौन जिले से लगा हुआ भिण्ड जिले का पूर्वी हिस्सा सम्मिलित है। सन्स्कृति के विस्तार को घने जंगल तथा बीहड़ बाधित करते हैं। चम्बल और कुमारी नदी के बीहड़ों तथा दुर्गम भागों के कारण एवम् मुरैना और शिवपुरी के घने जंगलों के होने से बुन्देली भाषा और सन्स्कृति का प्रसार इटावा, मैनपुरी और आगरा जिलों तक नही पहुँच पाया।

बुन्देलखण्ड की पश्चिमी सीमा पर बेतवा और ऊपरी सिन्ध नदियां तथा सीहोर से उत्तर में गुना और शिवपुरी तक फैला मिट्टी का पठार है। पठार के ही समानान्तर विन्ध्य श्रेणियां भोपाल से लेकर गुना तथा शिवपुरी के कुछ भाग तक फैली हुई हैं, जो अवरोधक का कार्य करती हैं। बुन्देलखण्ड के पश्चिम में रायसेन जिले के रायसेन और गौहरजंग तहसीलों का पूर्वी भाग, विदिशा जिले की विदिशा, बासौदा और सिरोन्ज तहसीलों के पूर्वी भाग की सीमा बेतवा बनाती है। गुना जिले की अशोक नगर, मुंगावली तथा शिवपुरी की पिछोर और करैरा तहसीलें है जिनकी सीमा सिन्ध नदी बनाती है। विदिशा इतिहास प्रसिद्ध तथा दशार्णी सन्स्कृति का प्रमुख केन्द्र रहा है। नाग सन्स्कृति भी बुन्देलखण्ड के बड़े भू–भाग में प्रसारित रही है।

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड  का संक्षिप्त वर्णन

बान्दा का भूगोल(लोकश्रुति के अनुसार)

जिले का नाम मुख्यालय शहर बान्दा के नाम पर रखा गया है, जिसके बारे में कहा जाता है कि इसका नाम बामदेव, एक ऋषि से लिया गया है जिनका उल्लेख हिंदू पौराणिक कथाओं में भगवान राम के समकालीन के रूप में किया गया है। कहा जाता है कि बामदेव का आश्रम बान्दा में खुटला इलाके के पास बांबेश्वर पहाड़ी की तलहटी में था।

स्थान और सीमाएं

यह जिला उत्तर प्रदेश के चित्रकूटधाम मंडल में स्थित है, जिसका मुख्यालय बान्दा में है और यह अक्षांश $24^0$ 53श और $25^0$ 55श उत्तर और देशांतर $80^0$ 07श और $81^0$ 34श पूर्व के बीच स्थित है। यह उत्तर में फतेहपुर जिले से, पूर्व में चित्रकूट जिले से, पश्चिम में हमीरपुर और महोबा जिलों से और दक्षिण में सतना, पन्ना और छतरपुर से सटे मध्य प्रदेश के जिलों से घिरा है।

एम एस एल–

बान्दा– समुद्र तल से ऊंचाई 123 मी है।

जंगल–

बुन्देलखण्ड में जंगल(प्रतिशत में) बान्दा 2.31 महोबा 5.14 चित्रकूट 19.64 जालौन 5.42 हमीरपुर 5.65 झांसी 6.005 ललितपुर 11. 54

जनसन्ख्या–

बान्दा– बुन्देलखण्ड का उत्तर प्रदेश का इलाका है भारत की जनगणना 2011 के मुताबिक बान्दा शहर की जनसन्ख्या 170000 है। नगर निगम का दर्जा देने के लिए बान्दा शहर की जनसन्ख्या 5 लाख होनी चाहिए इसलिए बान्दा 2023 में भी नगर पालिका परिषद ही है

सामान्य सूचना

बान्दा तहसील बान्दा जिले की सामान्य सूचना

बान्दा तहसील में 139 गांव हैं जिसमें 119 आबाद गांव है 14 गैरआबाद गांव है। खादर की सन्ख्या छह हैं। वर्तमान 2011 में बान्दा, मटौन्ध तिन्दवारी बबेरु अतर्रा बिसन्डा ओरन नरैनी कुल 8 नगर पालिका परिषद है। तहसील का कुल क्षेत्रफल 96773 हेक्टेयर है। नगर पालिका परिषद बान्दा की जनसन्ख्या 160432 है। नगर पंचायत मटौन्ध की जनसन्ख्या 9392 है। नगर पंचायत तिंदवारी की जनसन्ख्या 11104 है। कुल 89 लेखपाल हैं और 9 राजस्व निरीक्षक फील्ड हैं दो तहसीलदार के पद हैं और तहसीलों की कुल जनसन्ख्या बान्दा तहसीलदार के द्वारा 4,70,543 है। (2011 में है बान्दा तहसील के डिटेल)

भूविज्ञान

यह जिला गंगा के जलोढ़ के सन्पर्क में आने वाले प्रायद्वीपीय भारत के उत्तरी किनारे का हिस्सा है। सभी प्री–कैम्ब्रियन चट्टानों की उपस्थिति के कारण देश के भूविज्ञान में इसका एक महत्वपूर्ण स्थान है, सन्भवतः भारतीय उप–महाद्वीप में सबसे पुरानी चट्टानों से, एक कॉम्पैक्ट रैखिक पूर्व–पश्चिम खंड में।

पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने अधिकान्श  क्षेत्रों का क्षेत्रीय भूवैज्ञानिक मानचित्रण, खनिज मूल्यांकन बीवी(ठट) विस्तृत मानचित्रण, भूभौतिकीय और भूरसायनिक अन्वेषण किए हैं, जहां पाइरोफिलिटक, मिट्टी और आधार धातु के लिए आवश्यक है।

जिले की पूर्व से पश्चिम तक की दूरी 75 किलोमीटर है। तथा उत्तर से दक्षिण तक की दूरी 50 स 60 किलोमीटर है। यह जिला कानपुर, इलाहाबाद, चित्रकूट, फतेहपुर, हमीरपुर, महोबा तथा मध्य प्रदेश के सभी समीपवर्ती जिलों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। लखनऊ (राज्य की राजधानी) से बान्दा तक सड़क मार्ग से दूरी 219 किमी है।

## भौगोलिक / Bhaugolik

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड  का संक्षिप्त वर्णन

जमीन

बान्दा तहसील में सबसे अच्छी काली मिट्टी मिलती है। कुल 2,47,485 एकड़ जमीन में से लगभग 90.56 प्रतिशत पर खेती व जंगल हैं। उन्नीस सौ पांच ईस्वी के आंकड़ों के अनुसार 1,39,521 एकड़ अर्थात 56.38 प्रतिशत पर कृषि थी। मुख्य फसलें ज्वार/जुआर, कपास तिलहन बाजरा हैं, जो खरीफ की फसलें कहलाती हैं। रबी में गेहूं, केवल चना, गेहूं चना मिश्रित होता है। नील व गन्ने की खेती नहीं होती है।

फसल

रबी 56 प्रतिशत और खरीफ 44 प्रतिशत होती रही है, लेकिन दो फसली खेती बहुत कम थी। बान्दा का पूर्वी हिस्सा –जो केन नहर से सिन्चित है और दो शाखाएं जो पैलानी में बनती हैं –से अलोना और तिन्दवारी चली गई है। केन नदी के पार पश्चिम का पूरे जिले में क्षेत्र पूर्ण रूप से अनिश्चित और सन्दिग्ध रहता है– शायद ही कोई आपदा है जो यहां नहीं आई।

3

स्थलाकृति

जिले में बड़े पैमाने पर अनियमित ऊपरी भूमि है जिसमें चट्टानों के उभार हैं और अधिकतर निचली भूमि है, जो बरसात के मौसम में अक्सर जलमग्न हो जाती है। बाघिन नदी दक्षिण – पश्चिम से उत्तर–पूर्व की ओर जिले को पार करती है। नदी के दाईं ओर स्थित भूभाग कई छोटी नदियों और नालों से घिरा हुआ है, लेकिन इसके बाईं ओर समतल विस्तार है, जो अधिकान्श  भाग में मार और काबर मिट्टी से बना है, जो केन और यमुना के किनारे और कुछ हद तक बाघिन नदी और गदरा नाला के साथ कटाव और खड्डों में परिवर्तित हो गया है।

जिले की सामान्य ढलान दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व की ओर है, जैसा कि पहले बताया गया है कि बाघिन नदी का मार्ग भी इसी दिशा में है। जिला दो स्पष्ट रूप से परिभाषित भागों में आता है– एक उच्च भूमि जिसे पाठा कहा जाता है, जो मऊ और कर्वी तहसीलों के दक्षिण में विन्ध्य पठार पर स्थित है (वर्तमान में चित्रकूट जिले के रूप में जाना जाता है), दूसरा जलोढ़ की निचली भूमि (वर्तमान में बान्दा जिले के रूप में जाना जाता है)।

झीलें और पहाड़ियाँः

जिले में कोई झील नहीं है। फिर भी कुछ बड़े गड्ढे हैं जो हमेशा पानी बनाए रखते हैं। यहां कई तालाब हैं, जिनमें से कुछ काफ़ी बड़े हैं, जैसे कि बबेरू तहसील के खार में। इनमें से कई तालाब पानी के भन्डारण के लिए खोदे गए हैं, जिनमें से कई का इस्तेमाल राहत कार्यों के लिए किया गया है।

जिले की पहाड़ियों में विन्ध्य पठार का वह हिस्सा शामिल है जो मऊ और कर्वी तहसीलों (जिसे अब चित्रकूट जिले के नाम से जाना जाता है) के सुदूर दक्षिणी भाग में स्थित है। विन्ध्य की उत्तरी सीमा जिसे विन्ध्याचल श्रेणी के नाम से जाना जाता है, मऊ तहसील के सुदूर पूर्व में यमुना के पास से शुरू होती है। यह यमुना से दक्षिण–पश्चिम दिशा में पीछे हटती है– धीरे–धीरे ऊंचाई में बढ़ती जाती है, हालान्कि औसत समुद्र तल से कहीं भी 450 मीटर से अधिक नहीं होती है। यह अनुसुइया की पवित्र पहाड़ियों के पास जिले को छोड़ देती है और नरैनी तहसील के दक्षिण–पूर्वी भाग में गोधरामपुर के रूप में फिर से प्रकट होती है। इस बिन्दु से पश्चिम की ओर कालिन्जर तक जिले की सीमा से पहाड़ियाँ हैं।




भौगोलिक / **Bhaugolik**

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड  का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ / सौजन्यः


1 ीजजचरूध्ध्मदण्ूापापचमकपंण्वतहध्ूापापध्झमदत्रऋत्पअम

2 थ्नसस जमगज व ित्रऋळंमजजममत व ि्पदकपं न्जजंत च्तंकमीए क्पेजतपबज ठंदकंत्रऋ

3 ळंमजजममत व ि्पदकपं न्जजंत च्तंकमीए क्पेजतपबज ठंदकंत्रऋ ठन्छक्म्‌ 1909 च्हम26

4 ीजजचेरूध्ध्तबीपअमण्वतहध्जतमंउध्कसपण्बेसण्2889ध्2889ऋकरअनण्जगज च्हम7.12

5 त्पअमत ैलेजमउ ।दपझ ॅजमत त्मेवनतबमे

6 ठनदकमसींदक ज्ञप बीपजतांसं.1.197

7 ठनदकमसींदक16 अपदपजं

8 भ्पदकप.ज्ञम नचंदलेंव उम इनदकमसींदक

9 फाइल बान्दा हिस्ट्री विलेज तहसील बान्दा

10 आर्कियोलॉजी सर्वे रिपार्ट, वाल्यूम 21 ए0 कनिन्घम में पृ सं0 82

11 इण्डिया ए रीजनल ज्याँग्राफी, सर आर. एल सिन्ह, पृ 644

12 डा0 काशी प्रसाद जायसवाल द्वारा लिखित ''अन्धार युमीन भारत''

13 (बुन्देलखण्ड दर्शन – मोतीलाल त्रिपाठी 'ल' (पृ० सन्ख्या– 26))

14 (बुन्देलखण्ड दर्शन – मोतीलाल त्रिपाठी '' (पृ0 सन्ख्या– 27))

15 बुन्देलखण्ड का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास– अब्दुल करयूम मदनी (पृ०सं–8)

16 स0 1877 ई टी ऐटिकिन्सन


ग इदकं ीपेज ूंजमत ।मद बंदंस से और जानकारी जोडे

भौगोलिक / **Bhaugolik**